अनुक्रमणिका

1	वर्ण विचार	2
2	विकारी शब्द	9
3	संज्ञा	10
4	सर्वनाम	13
5	विशेषण	16
6	क्रिया	21
7	अविकारी शब्द	23
8	वाक्य विचार	26
9	लिंग	30
10	वचन	33
11	काल	35
12	कारक	42
13	वाच्य	46
14	उपसर्ग	49
15	प्रत्यय	51
16	संधि	53
17	समास	58
18	विलोम शब्द	65
19	पर्यायवाची शब्द	67
20	मुहावरे	69
21	लोकोक्तियाँ	71
22	रस	73
23	अलंकार	76
24	वाक्यांश के लिए एक शब्द	79
25	अनेकार्थी	87
26	शब्द शक्ति	88
27	काव्य गुण	92
28	विराम चिह्न	94
29	छंद	97
30	पदबंध	102
31	फीडबैक	104

वर्ण–विचार

1

प्र01 वर्ण किसे कहते हैं?

उ0 वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े या खंड न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

उदाहरण:– अ, इ, क, ख, च आदि। वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

प्र02 वर्ण के कितने भेद हैं?

उ0 वर्ण के दो भेद हैं:–

1. स्वर 2. व्यंजन

प्र03 वर्णमाला किसे कहते हैं?

उ0 वर्णों के क्रमबद्ध समूह को ही वर्णमाला कहते हैं।

वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ	11 स्वर
अं अः	2 अयोगवाह
क ख ग घ ङ. च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म	25 स्पर्श व्यंजन
य र ल व	4 अंत:स्थ व्यंजन
श ष स ह	4 ऊष्म व्यंजन
क्ष त्र ज्ञ श्र	4 संयुक्त व्यंजन
ड़ ढ़	
कुल वर्ण संख्या	52

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं, जिनमें 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं।

प्र04 स्वर किसे कहते हैं? इसके कितने प्रकार हैं?

उ0 जिन ध्वनियों या वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता न लेनी पड़े, उन्हें स्वर कहते हैं।
उदाहरणः– अ, आ, इ, ई, उ आदि।

हिंदी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 11 है।
स्वर के तीन भेद हैं:–

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

1. ह्रस्व स्वरः– जिन स्वरों के उच्चारण में कम–से–कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।
या जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।
उदाहरणः– अ, इ, उ, ऋ
हिंदी में कुल 4 ह्रस्व स्वर हैं। इन्हें 'मूल स्वर' भी कहते हैं।

2. दीर्घ स्वरः– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
या जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
उदाहरणः– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिंदी में कुल सात स्वर हैं,
जिनका उच्चारण दीर्घ रूप में होता है।

3. प्लुत स्वरः– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुणा अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।
या जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।
उदाहरणः– ओ३म, हे राम!
इन्हें त्रिमात्रिक स्वर भी कहते हैं।

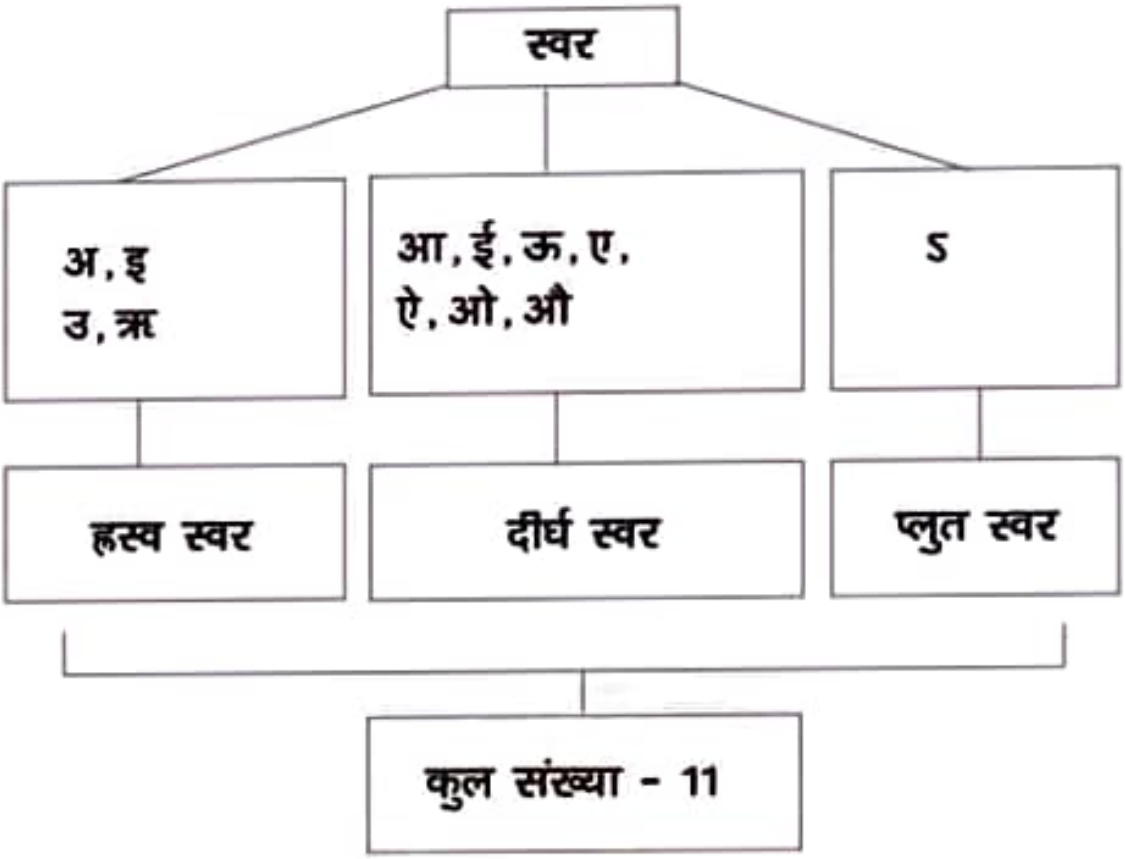

प्र05 अयोगवाह किसे कहते हैं?

उ0 हिंदी वर्णमाला में अं तथा अः को अयोगवाह की संज्ञा दी जाती है। इन्हें स्वरों के साथ तो रखा गया है, किंतु स्वतंत्र गति न होने के कारण इन्हें स्वर नहीं माना जाता है। स्वरों के साथ प्रयुक्त होने के कारण ये व्यंजनों की श्रेणी में भी नहीं आते हैं।

स्वरों तथा व्यंजनों में से किसी के साथ योग न होने के बावजूद ये ध्वनि वहन करते हैं, इसलिए इन्हें अयोगवाह कहा जाता है।

प्र06 स्वरों की मात्राएँ क्या हैं?

उ0 स्वर जब व्यंजन के साथ मिलते हैं तो उनका रूप बदल जाता है, इस बदले हुए रूप को 'मात्रा' कहा जाता है।

अ के अतिरिक्त शेष स्वरों को जब व्यंजनों के साथ प्रयुक्त किया जाता है तो उनकी मात्राएँ ही लगती हैं।

अ की मात्रा नहीं होती। अ से रहित व्यंजनों को हलंत (्) लगाकर दिखाया जाता है।

उदाहरण:– क् + अ = क

ख् + अ = ख

स्वरों की मात्राएँ

स्वर	मात्रा	शब्द प्रयोग
आ	ा	माता
इ	ि	दिन
ई	ी	जीत
उ	ु	कुछ
ऊ	ू	फूल
ऋ	ृ	कृषक
ए	े	खेल
ऐ	ै	बैल
ओ	ो	कोमल
औ	ौ	औरत

प्र07 अनुस्वार तथा अनुनासिक में क्या अंतर है?

उ0 अनुस्वार:– जब वर्ण का उच्चारण केवल नासिका से हो तब वह अनुस्वार कहलाता है।

हिंदी में अं तथा प्रत्येक वर्ग (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग) का पंचम वर्ण (ङ.ञ, ण, न तथा म) अनुस्वार हैं।

उदाहरण:– चंचल, अंक, रंक, पंख, गंगा आदि।

अनुनासिक:– जब वर्ण का उच्चारण नासिका तथा मुख दोनों से समान रूप से हो तब वह अनुनासिक कहलाता है।

उदाहरण:– पाँच, काँच, आँख आदि।

प्र08 व्यंजन किसे कहते हैं?
यह कितने प्रकार के होते हैं?

उ0 जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।
हिंदी वर्णमाला में व्यंजनों की कुल संख्या 33 है।

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं:–

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंतस्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन:– जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में श्वास–वायु मुख के अलग–अलग भागों को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

हिंदी वर्णमाला में इनकी संख्या 25 है।

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
तवर्ग	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म

2. अंत:स्थ व्यंजन:– अंत:स्थ शब्द का अर्थ है–
मध्य या बीच में स्थित।
हिंदी वर्णमाला के कुछ व्यंजन, स्वर तथा व्यंजन के मध्य आते हैं।
इन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं।
इनकी संख्या 4 है।
य, र, ल, व

विशेषण 5

जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता का बोध होता है, उन्हें विशेषण कहते हैं।

जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

जैसे:– चंचल बालक, यहाँ 'चंचल' विशेषण है और बालक विशेष्य है।

विशेषण के भेद:–

विशेषण के चार भेद होते हैं।

1. गुणवाचक विशेषण।
2. संख्यावाचक विशेषण।
3. परिमाणवाचक विशेषण।
4. सार्वनामिक विशेषण।

प्र0 गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 गुणवाचक विशेषण:– जिन विशेषण शब्दों में किसी के गुण, दोष, रंग–रूप, आकार, प्रकार, स्वाद आदि का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण–

गुण :	योग्य, परिश्रम, ईमानदार।
दोष :	आलसी, बेईमान।
रंग–रूप :	काला, गोरा।
आकार–प्रकार :	लंबा, चौड़ा, गोल।
स्वाद :	खट्टा, मीठा।
गंध :	सुगंधित, गंधहीन।
अवस्था :	बलवान, गरीबी।
स्थिति :	अगला, ऊपरी।
देश–काल :	पंजाबी, नवीन आदि।

2. महाप्राण व्यंजनः– जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास–वायु अल्पप्राण की तुलना में कुछ अधिक निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन, महाप्राण व्यंजन हैं।

उदाहरणः–

कवर्ग	ख	घ
चवर्ग	छ	झ
टवर्ग	ठ	ढ
तवर्ग	थ	ध
पवर्ग	फ	भ

और ऊष्म व्यंजन – श, ष, स, ह।

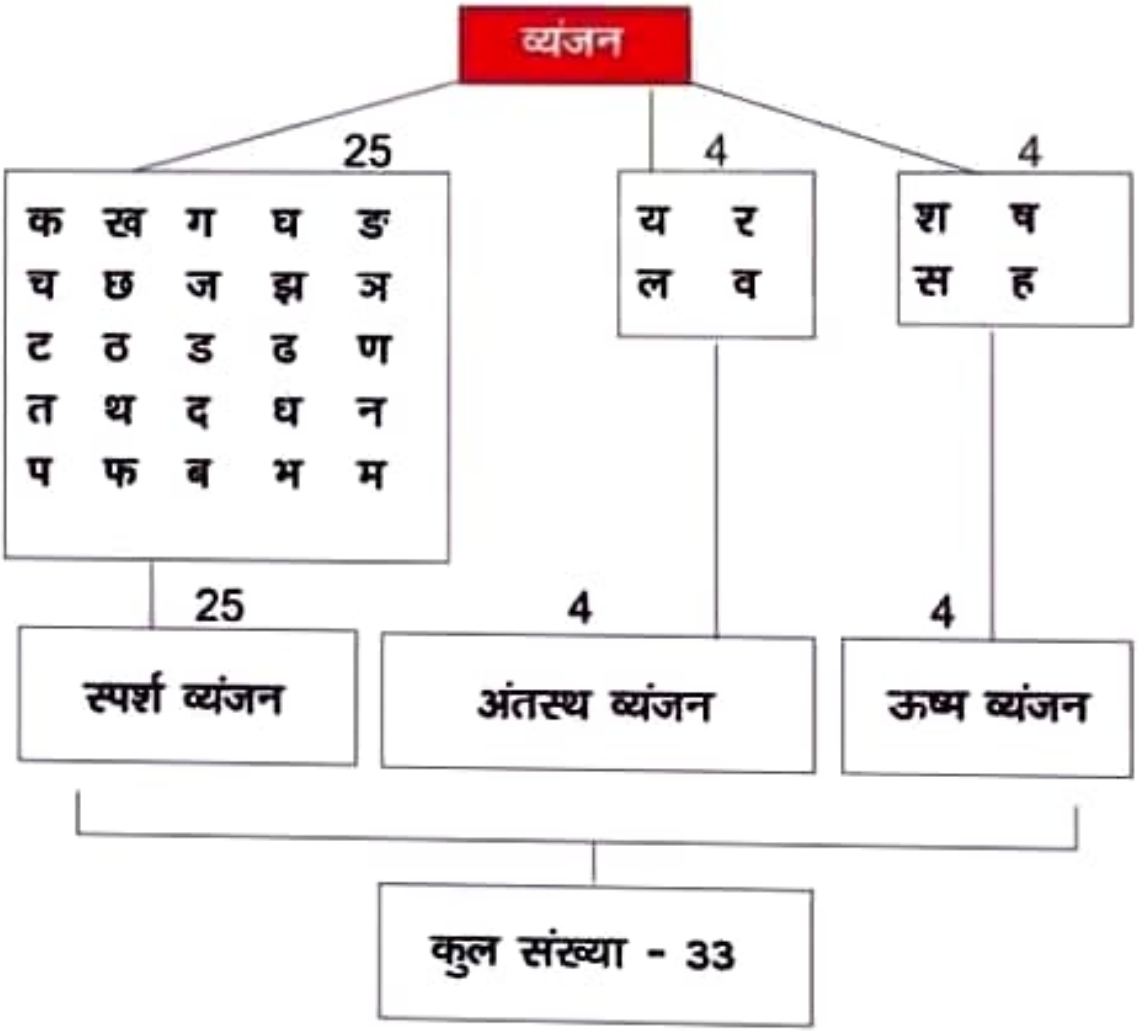

विकारी शब्द

2

वह शब्द जिसमें लिंग, वचन, काल, कारक आदि के प्रयोग के कारण परिवर्तन हो, उसे विकारी शब्द कहते हैं ।

जैसे : राम, हम, कमल, दिल्ली आदि ।

जैसे- मैं→ मुझ→ मुझे→ मेरा, अच्छा→ अच्छे आदि।

विकारी शब्द के भेद

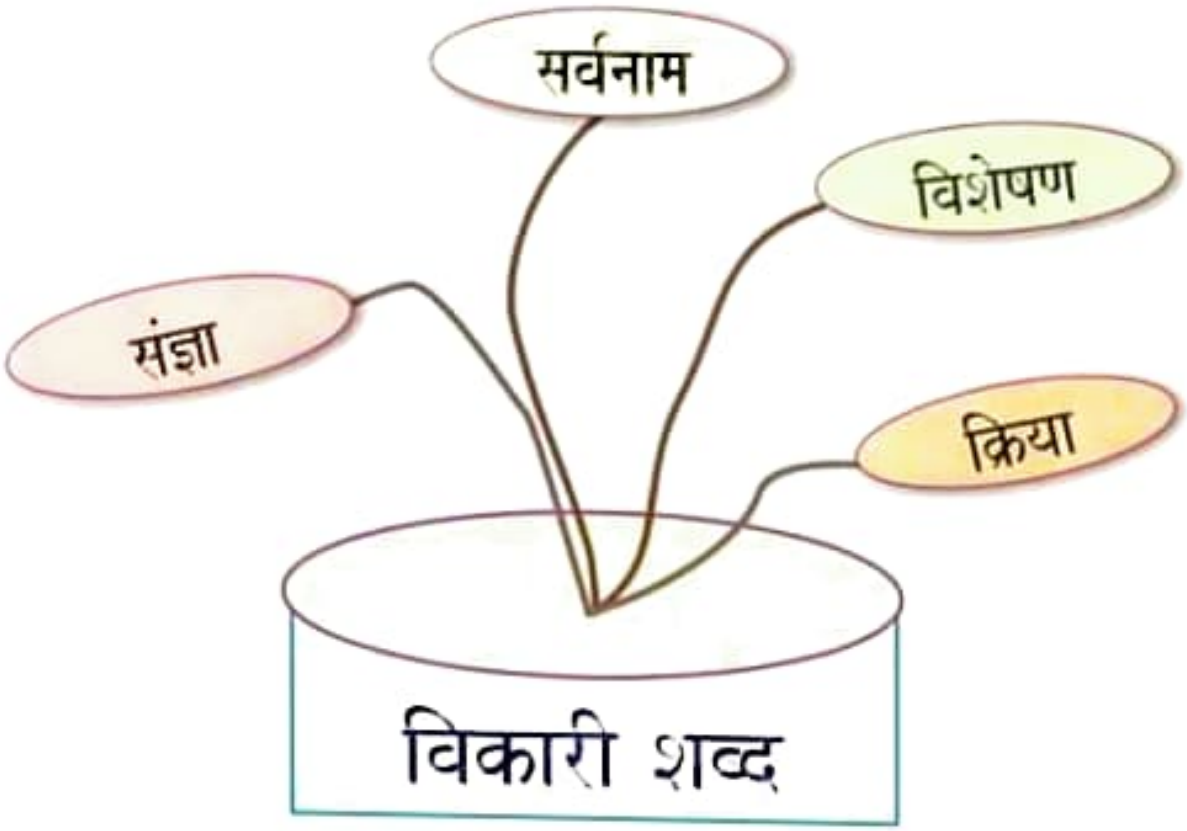

संज्ञा 3

प्र01 संज्ञा किसे कहते हैं?

उ0 संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है– नाम। किसी भी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।

जैसे राम, हिमालय, गुलाब आदि।

प्र02 संज्ञा को मुख्यतः कितने भागों में बाँटा गया है? संक्षेप में लिखिए।

उ0 संज्ञा को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है:–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के नाम का बोध हो, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं,

जैसे:–

1. राम, सीता, मोहन आदि व्यक्तियों के नाम हैं।

2. भारत, श्रीलंका, करनाल आदि स्थानों के नाम हैं।

3. हिमालय, कैलाश आदि पर्वतों के नाम हैं।

4. गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के नाम हैं।

5. पद्मावत,

रामचरितमानस आदि पुस्तकों के नाम हैं।

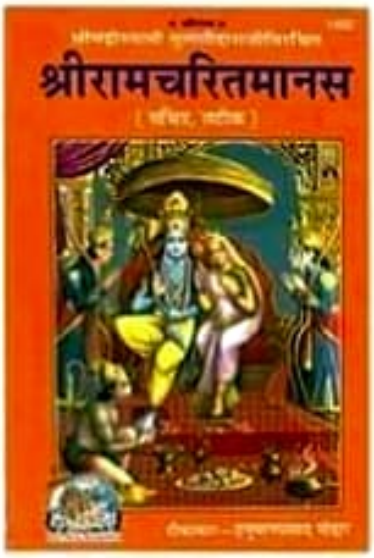

2. जातिवाचक संज्ञा : जिन शब्दों से किसी जाति के सभी पदार्थों और प्राणियों का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं,

जैसे:-

1. घोड़ा, गाय, शेर, कोयल, मोर आदि पशु-पक्षियों के नाम हैं।

2. आम, केला, गुलाब, कमल आदि फल-फूलों के नाम हैं।

3. पर्वत, नदी, पुस्तक, पैन, घड़ी आदि वस्तुओं के नाम हैं।

संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं:-

1. द्रव्यवाचक:- जिन शब्दों से किसी धातु अथवा द्रव्य का बोध हो,उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे सोना, चाँदी, लोहा, पानी, तेल आदि।

2. समूहवाचक:- जिन शब्दों से व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे कक्षा, संघ, गाँव सेना, टीम आदि।

3. भाववाचक:- जिन शब्दों से व्यक्ति, वस्तु आदि के धर्म, गुण, भाव, दशा आदि का बोध होता हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहा जाता है,

जैसे:-

1. मित्रता, सज्जनता, शत्रुता आदि गुण-दोष हैं।

2. आनंद, क्रोध, श्रद्धा, भक्ति आदि भाव हैं।

3. बचपन, यौवन, बुढ़ापा आदि दशाएँ हैं।

सर्वनाम

4

प्र01 सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 सर्वनाम दो शब्दों के मेल से बना है। सर्व और नाम। सर्व यानि सब और नाम यानि नाम वाले शब्द।

वह विकारी शब्द, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो, उसे सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण:– मैं, हम, मेरा, हमारा, तू, तुम, तुम्हारा, आप, वह, यह, ये, वे, कौन, क्या, कब इत्यादि।

प्र02 सर्वनाम के कितने भेद होते हैं? उनके नाम भी लिखिए।

उ0 सर्वनाम के छः भेद होते हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैं:–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्र03 पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों का प्रयोग उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के लिए किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:–

क. उत्तम पुरुष :– मैं, हम।

ख. मध्यम पुरुष :– तू, तुम और आप।

ग. अन्य पुरुष :– यह, ये, वह, वे।

प्र04 उत्तम पुरुष सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 बोलने वाला अथवा लेखक जिन पुरुषवाचक सर्वनामों का प्रयोग स्वयं के लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:– मैं, हम, मुझे, हमें, मैंने, मेरा, मुझको

मैं दिल्ली जाऊँगा।

हम भारतवासी हैं।

सर्वनाम

प्र05 मध्यम पुरूष सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 बोलने **वाला** जिससे बात **करता है** उसके लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम, मध्यम पुरूष सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे:– 'तुम' कम बातें किया करो।

तू, तुम, तुमको, तुझे, आप, आपको, आपके आदि

प्र06 अन्य पुरूष सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 बोलने वाला किसी अन्य व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के संबंध में जिन सर्वनामों **का प्रयोग करता है, वे** अन्य पुरूष सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे:–

'वे' सज्जन हैं।

वह, यह, उन, ये, उनको, उनसे, उन्हें, उसके आदि।

प्र07 निश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 **जिन सर्वनामों** से किसी निश्चित प्राणी, **वस्तु अथवा स्थान का बोध होता** है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:–

यह, ये, वह, वे।

'ये' भारतवासी हैं। **'वे' प्रवासी हैं।**

'यह' मेरी पुस्तक है।

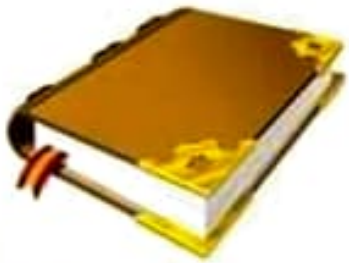

प्र08 अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से किसी प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का निश्चित रूप से बोध नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:– कोई, कुछ।

दरवाजे पर कोई खड़ा है।

दाल में कुछ काला है।

प्र9 संबंधवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से संज्ञा के साथ संबंध होता है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे:– जो, सो, वह, जिसकी, उसकी, जैसा, वैसा आदि।

जो प्रयत्न करता है, वह फल भी पाता है।

जो करेगा, सो भरेगा।

जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

प्र10 प्रश्नवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, क्रिया, व्यापार आदि के विषय में व्यक्ति अथवा प्राणी के संबंध में प्रश्न करना हो तो कौन का प्रयोग होता है। अन्यथा क्या का।

जैसे:– कौन, क्या।

राम को कौन नहीं जानता?

प्र07 निजवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 जो सर्वनाम स्वयं के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:– आप निजवाचक सर्वनाम है।

इसका तीनों पुरूषों में प्रयोग होता है।

आप भला तो जग भला।

(उत्तम पुरूष मैं के लिए)

भगत सिंह ने अपने आपको राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। (अन्य पुरूष के लिए)

विशेषण 5

जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता का बोध होता है, उन्हें विशेषण कहते हैं।

जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

जैसे:– चंचल बालक, यहाँ 'चंचल' विशेषण है और बालक विशेष्य है।

विशेषण के भेद:–

विशेषण के चार भेद होते हैं।

1. गुणवाचक विशेषण।
2. संख्यावाचक विशेषण।
3. परिमाणवाचक विशेषण।
4. सार्वनामिक विशेषण।

प्र0 गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 गुणवाचक विशेषण:– जिन विशेषण शब्दों में किसी के गुण, दोष, रंग–रूप, आकार, प्रकार, स्वाद आदि का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण–

गुण :	योग्य, परिश्रम, ईमानदार।
दोष :	आलसी, बेईमान।
रंग–रूप :	काला, गोरा।
आकार–प्रकार :	लंबा, चौड़ा, गोल।
स्वाद :	खट्टा, मीठा।
गंध :	सुगंधित, गंधहीन।
अवस्था :	बलवान, गरीबी।
स्थिति :	अगला, ऊपरी।
देश–काल :	पंजाबी, नवीन आदि।

प्र0 संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 संख्यावाचक विशेषण:– जिन विशेषण शब्दों में संख्या का बोध हो, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे:–एक, दो, दुगुना आदि
संख्यावाचक के मुख्य दो भेद हैं:–

1. निश्चित संख्यावाचक
2. अनिश्चित संख्यावाचक

निश्चित संख्यावाचक विशेषण:– जिस विशेषण में वस्तु, प्राणी अथवा पदार्थ की संख्या निश्चित हो, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
इसके निम्नलिखित भेद हैं:–

1. गणनासूचक– एक पुस्तक, दस रुपए आदि।
2. क्रम सूचक– पहला, दूसरा, तीसरा।
3. प्रत्येक सूचक– प्रत्येक बच्चा, प्रति मास।
4. समुदाय सूचक– चारों व्यक्ति, सैंकड़ों आम।
5. आवृत्ति सूचक– दुगुना, तिगुना।
6. अपूर्ण संख्यावाचक– 1/4 (पाव), 1/2 (आधा)।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण:– जिस विशेषण में वस्तु, प्राणी अथवा पदार्थ की संख्या अनिश्चित रहती है, उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– कुछ पुस्तकें, सब लोग।

कुछ, सब, थोड़े, बहुत, अधिक कुछ विशेषण ऐसे हैं जो परिमाणवाचक तथा संख्यावाचक दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं। यदि विशेष्य गिनी जाने वाली वस्तु है तो संख्यावाचक अथवा परिमाणवाचक है।

प्र0 परिमाणवाचक विशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 परिमाणवाचक विशेषण:– जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु, पदार्थ के माप या नाप–तोल का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं:–

क. निश्चित परिमाणवाचक:–

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध कराते हैं।

जैसे:– चार गज कपड़ा, दस लीटर दूध।

ख. अनिश्चित परिमणवाचक:–

जब किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता, तो उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे:– कुछ आम, थोड़ा पानी, कम चीनी, थोड़ा दूध।

प्र0 सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 सार्वनामिक विशेषण–

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी के विषय में संकेत पाया जाए, उन्हें सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे:– यह घर हमारा है।

तुम किस गली में रहते हो?

सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषणों का निम्नलिखित रूपों में प्रयोग होता है।

1. निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण:–

   उस व्यक्ति को यहाँ बुलाइए।

   क्या यह पुस्तक तुम्हारी है?

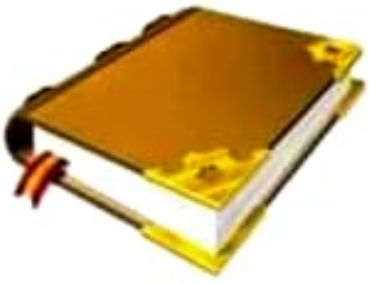

2. अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण:–

   कोई सज्जन आए हुए हैं।

   घर में कुछ भी खाने को नहीं है।

3. प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण:–

   कौन लोग आए हैं?

   कौन सी पुस्तक तुम्हें चाहिए?

4. संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण:–

   जो व्यक्ति कल आया था, वह बाहर खड़ा है।

   वह बच्चा सामने जा रहा है, जिसने तुम्हारी पुस्तक चुरा ली थी।

प्र० विशेषण में उद्देश्य और विधेय की क्या स्थिति है?

उ० उद्देश्य विशेषण:–

विशेष्यों के पूर्व लगने वाले विशेषणों को उद्देश्य विशेषण कहते हैं, जैसे– अच्छा लड़का, सुंदर लड़की आदि।

विधेय विशेषण:– विशेष्य के बाद में प्रयुक्त होने वाले विशेषण विधेय विशेषण कहलाते हैं, जैसे–

ये फल मीठे हैं। उसकी कमीज नीली है।

प्र० प्रविशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ० प्रविशेषण:–

प्रविशेषण उन विशेषणात्मक शब्दों को कहते हैं, जो विशेषण को भी प्रकट करते हैं।

अथवा

विशेषण की भी विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

जैसे–

वह बड़ा भोला है।

मोहन बहुत चतुर है।

वह बड़ा परिश्रमी है।

वहाँ लगभग बीस छात्र हैं।

सामान्यत: प्रविशेषण निम्नलिखित हैं–

बहुत, बहुत अधिक, अत्यधिक, बड़ा, खूब, बिल्कुल, थोड़ा, कम, ठीक, पूर्ण, लगभग।

प्र० विशेषणों की रचना कीजिए।

उ० कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण होते हैं, जैसे: निपुण, चतुर, सुंदर। लेकिन कुछ प्रत्ययों तथा उपसर्गों के लगाने से विशेष्य विशेषण में परिवर्तित हो जाता है। जैसे:–

संज्ञा से – बनारस से बनारसी।
घर से घरेलू।

सर्वनाम से –मैं से मुझ सा।
इतना, उतना, ऐसा,

वैसा, आप सा।

क्रिया से – चलना से चालू।
भूलना से भुलक्कड़।

अव्यय से– बाहर से बाहरी।
ऊपर से ऊपरी।

विशेष्य	विशेषण
अंक	अंकित
जागरण	जागृत
आसमान	आसमानी
आभूषण	आभूषित
इतिहास	ऐतिहासिक
दंत	दंत्य
दान	दानी
चर्चा	चर्चित
चाचा	चचेरा
यश	यशस्वी
यदु	यादव

प्र0 सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ0 कुछ सार्वनामिक विशेषण और निश्चयवाचक सर्वनाम समान रूप में ही प्रयोग में आते हैं। अतः इनको पहचानने में भ्रम हो सकता है। इनकी पहचान के लिए सर्वनाम और विशेषण की परिभाषा पर ध्यान देना आवश्यक है।

यदि इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों से पहले हो तो ये सार्वनामिक विशेषण होंगे और यदि संज्ञा के स्थान पर अर्थात् अकेले प्रयुक्त हो तो सर्वनाम होंगे।

जैसे–

यह पुस्तक अभी छपी है।	(यह–विशेषण)
यह मेरे साथ खेलता है।	(यह–सर्वनाम)
उस घर में मेरा मित्र रहता है।	(उस–विशेषण)
उसने मुझे बचाया।	(उसने–सर्वनाम)
यह फल पका है।	(यह–विशेषण)
वह कच्चा है।	(वह–सर्वनाम)

क्रिया

6

जिस शब्द अथवा शब्द–समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा किए जाने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे:– सीता 'नाच रही है'।
बच्चा दूध 'पी रहा है'।
सुरेश कॉलेज 'जा रहा है'।

इनमें 'नाच रही है', 'पी रहा है', 'जा रहा है' शब्दों से कार्य व्यापार का बोध हो रहा है। इन सभी शब्दों से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो रहा है। अतः ये क्रियाएँ हैं।

व्याकरण में क्रिया एक विकारी शब्द है।

क्रिया के दो भेद हैं:–

1. सकर्मक क्रिया।
2. अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया :–
जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर नहीं, कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।
इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक होता है।

उदाहरण:–
मैं लेख लिखता हूँ।
सुरेश मिठाई खाता है।
मीरा फल लाती है।
भँवरा फूलों का रस पीता है।

अकर्मक क्रिया :–

जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर ही पड़ता है,
वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।
इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक नहीं होता है।

उदाहरण:–

राकेश रोता है।
साँप रेंगता है।
बस चलती है।

अविकारी शब्द 7

अव्यय की परिभाषा

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है उन्हें अव्यय(अ +व्यय) या अविकारी शब्द कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- 'अव्यय' ऐसे शब्द को कहते हैं, जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता। ऐसे शब्द हर स्थिति में अपने मूलरूप में बने रहते हैं। चूँकि अव्यय का रूपान्तर नहीं होता, इसलिए ऐसे शब्द अविकारी होते हैं। इनका व्यय नहीं होता, अतः ये अव्यय हैं।

जैसे- जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, क्यों, वाह, आह, ठीक, अरे, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अतः, अतएव, चूँकि, अवश्य, अर्थात इत्यादि।

अव्यय के भेद

अव्यय निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं -

(1) क्रियाविशेषण (Adverb)
(2) संबंधबोधक (Preposition)
(3) समुच्चयबोधक (Conjunction)
(4) विस्मयादिबोधक (Interjection)

(1) क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते हैं।
दूसरे शब्दो में- जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं , उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसे- राम धीरे-धीरे टहलता है; राम वहाँ टहलता है; राम अभी टहलता है।

इन वाक्यों में **'धीरे-धीरे'**, **'वहाँ'** और **'अभी'** राम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता है।

वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

प्र03 रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

उ0 रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं:–

1. सरल वाक्य:–

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. राम फुटबाल खेलता है।

2. सीता पुस्तक पढ़ती है।

2. संयुक्त वाक्य:–

जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य किसी योजक द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: सोहन स्कूल जाता है और पढ़ाई करता है।

3. मिश्रित वाक्य:–

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा उस पर आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: खाने–पीने का मतलब है कि मनुष्य स्वस्थ बने।

प्र04 अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

उ0 अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं:–

1. विधानवाचक वाक्य :–

जिस वाक्य में किसी काम के होने का पता चले, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. बच्चे पढ़ रहे हैं।

2. गीता गाना गा रही है।

2. निषेधवाचक वाक्य:–

जिस वाक्य में किसी काम के न होने का पता चले, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. बच्चे पढ़ नहीं रहे हैं।

2. गीता गाना नहीं गा रही है।

3. प्रश्नवाचक वाक्य:–

जिस वाक्य में प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे :- (i) वाह ! क्या बात है।
(ii) हाय ! वह चल बसा।
(iii) आह ! क्या स्वाद है।
(iv) अरे ! तुम यहाँ कैसे।
(v) छि: छि: ! यह गंदगी।

5. निपात अव्यय :- जो वाक्य में नवीनता या चमत्कार उत्पन्न करते हैं, उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। जो अव्यय शब्द किसी शब्द या पद के पीछे लगकर उसके अर्थ में विशेष बल लाते हैं, उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। इसे अवधारक शब्द भी कहते हैं। जहाँ पर ही, भी, तो, तक, मात्र, भर, मत, सा, जी, केवल आते हैं, वहाँ पर निपात अव्यय होता है।

जैसे :- (i) प्रशांत को **ही** करना होगा यह काम।
(ii) सुहाना **भी** जाएगी।
(iii) तुम तो सनम डूबोगे **ही** , सब को डुबाओगे।
(iv) वह तुमसे बोली **तक** नहीं।
(v) मैं भी दिल्ली जाऊँगा।

वाक्य–विचार

8

प्र01 वाक्य किसे कहते हैं? इसके कितने खंड हैं?

वाक्य:–

शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

अथवा

एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द–समूह को वाक्य कहते हैं।

अथवा

शब्दों का ऐसा समूह जिससे कहने वाले का अर्थ स्पष्ट हो जाए, उसे वाक्य कहते हैं।

उदाहरण:– रमेश दिल्ली जाता है।

वाक्य के खंड:– वाक्य के दो खंड निम्नलिखित हैं:–

1. उद्देश्य:–

वाक्य में जिसके बारे में विधान किया जाए अर्थात् जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।

उदाहरण:– राम दिल्ली जाता है।

इसमें राम उद्देश्य है।

2. विधेय:–

वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो विधान किया जाए, उसे विधेय कहते हैं।

उदाहरण:– मोहन रोटी खाता है।

इस वाक्य में रोटी खाना विधेय है।

प्र02 वाक्य के कितने तत्त्व हैं?

उ0 वाक्य के मुख्यत: छ: तत्त्व हैं:–

1. योग्यता:–

वाक्य में अर्थ प्रकट करने की योग्यता होनी चाहिए।

उदाहरण:–

गाय घास खाती है। ✓

गाय घास पीती है। ✕ यह वाक्य गलत है क्योंकि
गाय घास खाती है, पीती नहीं।

2. सार्थकता:–

वाक्य के अंदर सार्थक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

उदाहरण:– चाय–वाय पीओगे?

इसमें वाय सार्थक शब्द नहीं है।

इसलिए सही वाक्य है–चाय पीओगे?

3. आकांक्षा:–

वाक्य की समाप्ति पर कोई जिज्ञासा नहीं रहनी चाहिए।

उदाहरण:– शाम के समय पुजारी करता है।

इस वाक्य में एक जिज्ञासा है कि पुजारी क्या करता है।

इसलिए सही वाक्य है – शाम को पुजारी पूजा करता है।

4. समीपता:–

वाक्य में बोलते व लिखते समय समीपता रहनी चाहिए।

उदाहरण:– मैं कल दिल्ली जाऊँगा।

5. अन्वय:–

वाक्य के सभी पदों में कर्ता और कर्म के अनुसार
मेल होना चाहिए।

उदाहरण:– लड़की गीत गाता है।

यह वाक्य गलत है क्योंकि लड़की स्त्रीलिंग है।

इसलिए सही वाक्य है– लड़की गीत गाती है।

6. पदक्रम:–

वाक्य में पदों का उचित क्रम होना चाहिए।

उदाहरण:– वह पढ़ता है पुस्तक।

यह उचित वाक्य नहीं है।

सही वाक्य है– वह पुस्तक पढ़ता है।

प्र03 रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

उ0 रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं:–

1. सरल वाक्य:–

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. राम फुटबाल खेलता है।

2. सीता पुस्तक पढ़ती है।

2. संयुक्त वाक्य:–

जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य किसी योजक द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: सोहन स्कूल जाता है और पढ़ाई करता है।

3. मिश्रित वाक्य:–

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा उस पर आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: खाने–पीने का मतलब है कि मनुष्य स्वस्थ बने।

प्र04 अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

उ0 अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं:–

1. विधानवाचक वाक्य :–

जिस वाक्य में किसी काम के होने का पता चले, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. बच्चे पढ़ रहे हैं।

2. गीता गाना गा रही है।

2. निषेधवाचक वाक्य:–

जिस वाक्य में किसी काम के न होने का पता चले, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. बच्चे पढ़ नहीं रहे हैं।

2. गीता गाना नहीं गा रही है।

3. प्रश्नवाचक वाक्य:–

जिस वाक्य में प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण:– 1. आप क्या कर रहे हो?
2. क्या आप दिल्ली जाओगे?

4. इच्छावाचक वाक्य:–
जिस वाक्य से मन की इच्छा, आशीर्वाद या स्तुति का भाव प्रकट हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण:– 1. भगवान तुम्हें सद्‌बुद्धि दे।
2. काश मैं एक राजा होता।

5. आज्ञावाचक वाक्य:–
जिस वाक्य से किसी को आदेश या आज्ञा देने का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण:– 1. खिड़की बंद कर दो।
2. बैठ जाओ।

6. संदेहवाचक वाक्य:–
जिस वाक्य से किसी कार्य के होने में संदेह का पता चले, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण:– 1. राम का स्कूल आना मुश्किल है।
2. शायद आज वर्षा हो सकती है।

7. संकेतवाचक वाक्य:–
जिस वाक्य में एक कार्य का होना दूसरे पर निर्भर करे, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण:– 1. यदि मैं मेहनत करूँगी तो कक्षा में प्रथम आऊँगी।

8. विस्मयादिबोधक वाक्य:–
जिस वाक्य में हर्ष, शोक, विस्मय आदि भाव प्रकट हो, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण:– 1. ओह! बेचारा मारा गया।
2. वाह! क्या सजावट है।

लिंग

9

लिंग

लिंग संस्कृत का शब्द होता है जिसका अर्थ होता है - निशान। जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। इससे यह पता चलता है कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का है।

उदाहरण के लिए :

पुरुष जाति में = बैल, बकरा, मोर, मोहन, लड़का, हाथी, शेर, घोड़ा, दरवाजा, पंखा, कुत्ता, भवन, पिता, भाई आदि।

स्त्री जाति में = गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लड़की, हथिनी, शेरनी, घोड़ी, खिड़की, कुतिया, माता, बहन आदि।

लिंग के भेद :-

संसार में तीन जातियाँ होती हैं – (1) पुरुष , (2) स्त्री , (3) जड़। इन्हीं जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये हैं।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग
3. नपुंसकलिंग

1. पुल्लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे :- पिता , राजा , घोडा , कुत्ता , बन्दर , हंस , बकरा , लड़की, आदमी, सेठ , मकान , लोहा , चश्मा , दुःख , प्रेम , लगाव , खटमल , फूल , नाटक , पर्वत , पेड़ , मुर्गा , बैल , भाई , शिव , हनुमान , शेर आदि।

2. स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

जैसे :- हंसिनी, लड़की, बकरी, माता, रानी, जूं , सुई , गर्दन, लज्जा, बनावट आदि

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग

1. कवि = कवयित्री
2. विद्वान् = विदुषी
3. नेता = नेत्री
4. महान = महती
5. साधु = साध्वी
6. दादा = दादी
7. बालक = बालिका
8. घोड़ा = घोड़ी
9. शिष्य = शिष्या
10. छात्र = छात्रा
11. बाल = बाला
12. धोबी = धोबिन
13. पंडित = पण्डिताइन
14. हाथी = हथिनी
15. ठाकुर = ठकुराइन
16. नर = मादा
17. पुरुष = स्त्री
18. युवक = युवती
19. सम्राट = सम्राज्ञी
20. मोर = मोरनी
21. सिंह = सिंहनी
22. सेवक = सेविका
23. अध्यापक = अध्यापिका
24. पाठक = पाठिका
25. लेखक = लेखिका
26. दर्जी = दर्जिन
27. ग्वाला = ग्वालिन
28. मालिक = मालकिन
29. शेर = शेरनी
30. ऊँट = ऊंटनी
31. गायक = गायिका
32. शिक्षक = शिक्षिका
33. वर = वधू
34. श्रीमान = श्रीमती
35. मौसी = मौसा
36. नाग = नागिन
37. पड़ोसी = पड़ोसिन
38. मामा = मामी
39. बलवान = बलवती
40. नर तितली = तितली
41. भेड़िया = मादा भेडिया
42. नर मक्खी = मक्खी
43. कछुआ = मादा कछुआ
44. नर चील = चील
45. खरगोश = मादा खरगोश
46. नर चीता = चीता
47. भालू = मादा भालू
48. नर मछली = मछली
49. थोड़ा = थोड़ी
50. देव = देवी
51. लड़का = लड़की
52. ब्राह्मण = ब्राह्मणी
53. बकरा = बकरी
54. चूहा = चुहिया
55. चिड़ा = चिड़िया
56. बेटा = बिटिया
57. गुड्डा = गुडिया
58. लोटा = लुटिया
59. माली = मालिन
60. कहार = कहारिन

61. सुनार = सुनारिन
62. लुहार = लुहारिन
63. नौकर = नौकरानी
64. चौधरी = चौधरानी
65. देवर = देवरानी
66. सेठ = सेठानी
67. जेठ = जेठानी
68. बाल = बाला
69. सुत = सुता
70. तपस्वी = तपस्विनी
71. हितकारी = हितकारिनी
72. स्वामी = स्वामिनी
73. परोपकारी = परोपकारिनी
74. दास = दासी आदि।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार हैं :-

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार, गवर्नर, लेक्चरर, वकील, डॉक्टर, सेक्रेटरी, प्रोफेसर, शिशु, दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, श्वास, मंत्री आदि।

61. सुनार = सुनारिन
62. लुहार = लुहारिन
63. नौकर = नौकरानी
64. चौधरी = चौधरानी
65. देवर = देवरानी
66. सेठ = सेठानी
67. जेठ = जेठानी
68. बाल = बाला
69. सुत = सुता
70. तपस्वी = तपस्विनी
71. हितकारी = हितकारिनी
72. स्वामी = स्वामिनी
73. परोपकारी = परोपकारिनी
74. दास = दासी आदि।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार हैं :-

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार, गवर्नर, लेक्चरर, वकील, डॉक्टर, सेक्रेटरी, प्रोफेसर, शिशु, दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, श्वास, मंत्री आदि।

वचन

10

वचन

वचन का शब्दिक अर्थ संख्यावचन होता है। संख्यावचन को ही वचन कहते हैं। वचन का एक अर्थ कहना भी होता है। संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति , वस्तु के एक से अधिक होने का या एक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं। अर्थात संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं अर्थात संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से हमें संख्या का पता चले, उसे वचन कहते हैं।

जैसे :- लड़की खेलती है।
लड़कियाँ खेलती हैं।

वचन के भेद :-
1. एकवचन।
2. बहुवचन।

1. एकवचन क्या होता है :- जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक होने का पता चलता है, उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे :- लड़का , लडकी , गाय , सिपाही , बच्चा , कपड़ा , माता , पिता , माला , पुस्तक , स्त्री, टोपी , बन्दर , मोर , बेटी , घोड़ा , नदी , कमरा , घड़ी , घर , पर्वत , मैं , वह , यह , रुपया , बकरी , गाड़ी , माली , अध्यापक , केला , चिड़िया , संतरा , गमला , तोता , चूहा आदि।

2. बहुवचन क्या होता है :- जिस विकारी शब्द या संज्ञा के कारण हमें किसी व्यक्ति , वस्तु , प्राणी , पदार्थ आदि के एक से अधिक या अनेक होने का पता चलता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :- लड़के, गायें , कपड़े , टोपियाँ , मालाएँ , माताएँ , पुस्तकें , वधुएँ , गुरुजन , रोटियाँ , पेंसिलें , स्त्रियाँ , बेटे , बेटियाँ , केले , गमले , चूहे , तोते , घोड़े , घरों , पर्वतों , नदियों , हम , वे, ये , लताएँ , लड़कियाँ , गाड़ियाँ , बकरियाँ , रुपए।

एकवचन = बहुवचन

जूता = जूते
तारा = तारे
लड़का = लड़के
घोड़ा = घोड़े
बेटा = बेटे
मुर्गा = मुर्गे
कपड़ा = कपड़े
गधा = गधे
कौआ = कौए
केला = केले
पेड़ा = पेड़े
कुत्ता = कुत्ते
कमरा = कमरे
बात = बातें
रात = रातें
आँख = आँखें
पुस्तक = पुस्तकें
किताब = किताबें
गाय = गायें
बहन = बहनें
झील = झीलें
सडक = सडकें
दवात = दवातें
कविता = कविताएँ
लता = लताएँ
कन्या = कन्याएँ
माता = माताएँ
भुजा = भुजाएँ
पत्रिका = पत्रिकाएँ
शाखा = शाखाएँ
कामना = कामनाएँ
कथा = कथाएँ

कला = कलाएँ
वस्तु = वस्तुएँ
दवा = दवाएँ
चिड़िया = चिड़ियाँ
डिबिया = डिबियाँ
गुड़िया = गुड़ियाँ
चुहिया = चुहियाँ
बुढिया = बुढियाँ
लुटिया = लुटियाँ
बोतल = बोतलें
कुतिया = कुतियाँ
शक्ति = शक्तियाँ
राशि = राशियाँ
रीति = रीतियाँ
तिथि = तिथियाँ
नारी = नारियाँ
गति = गतियाँ
थाली = थालियाँ
रीति = रीतियाँ
नदी = नदियाँ
लड़की = लड़कियाँ
घुड़की = घुड़कियाँ
चुटकी = चुटकियाँ
टोपी = टोपियाँ
रानी = रानियाँ
रीति = रीतियाँ
थाली = थालियाँ
कली = कलियाँ
बुद्धि = बुद्धियाँ
सखी =सखियाँ
गौ = गौएँ
बहु = बहुएँ

वधू = वधुएँ
गऊ = गउएँ
लता = लताएँ
माता = माताएँ
धातु = धातुएँ
धेनु = धेनुएँ
लू = लुएँ
जू = जुएँ
बालक = बालकगण
अध्यापक = अध्यापकवृंद
मित्र = मित्रवर्ग
विद्यार्थी = विद्यार्थीगण
सेना = सेनादल
आप = आपलोग
गुरु = गुरुजन
श्रोता = श्रोताजन
गरीब = गरीबलोग
पाठक = पाठकगण
अधिकारी = अधिकारीवर्ग
स्त्री = स्त्रीजन
नारी = नारीवृंद
दर्शक = दर्शकगण
वृद्ध = वृद्धजन
व्यापारी =व्यापारीगण
सुधी = सुधिजन
पत्ता = पत्ते
बच्चा = बच्चे
बेटा = बेटे
कपड़ा = कपड़े
लड़का = लडके
बात = बातें
आँख = आँखें

काल

11

काल

काल का अर्थ होता है – समय। क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चले उसे काल कहते हैं। अर्थात कार्य – व्यापार के समय और उसकी पूर्ण और अपूर्ण अवस्था के ज्ञान के रूपांतरण को काल कहते हैं।

काल के उदाहरण :-

(i) सुनील गीता पढ़ता है।
(ii) प्रदीप पढ़ रहा है।
(iii) रमेश कल दिल्ली जाएगा।

काल के भेद :-

1. वर्तमान काल
2. भूतकाल
3. भविष्य कल

1. भूतकाल :-

भूतकाल का अर्थ होता है बीता हुआ। क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का पता चले उसे भूतकाल कहते हैं। अर्थात जिस क्रिया से कार्य के समाप्त होने का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं। इसकी पहचान वाक्यों के अंत में था, थे , थी आदि से होती है।

उदाहरण के लिए :-

(i) रमेश पटना गया था।
(ii) पहले मैं लखनऊ में पढ़ता था।
(iii) राम ने रावण का वध किया था।

भूतकाल के प्रकार :-

(1) सामान्य भूतकाल
(2) आसन्न भूतकाल
(3) पूर्ण भूतकाल
(4) अपूर्ण भूतकाल
(5) संदिग्ध भूतकाल
(6) हेतुहेतुमद् भूतकाल
(7) समयकालीन भूतकाल

(1) सामान्य भूतकाल :- जिस क्रिया के भूतकाल में क्रिया के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का संकेत मिले, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं। अर्थात जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का बोध नहीं होता है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

सामान्य भूतकाल की क्रिया से यह पता चलता है कि क्रिया का व्यापार बोलने से या लिखने से पहले हुआ। जिन वाक्यों के अंत में आ , ई , ए , था , थी , थे आते हैं वे सामान्य भूतकाल होता है।

जैसे :-

(i) मैंने गाना गाया।
(ii) खिलाडी खेलने गए।
(iii) सीता गई।

(2) आसन्न भूतकाल :- आसन्न का अर्थ होता है -निकट। जिस क्रिया के अभी-अभी या निकट के भूतकाल में पूरा होने का पता चले, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से हमें यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

क्रिया के जिस रूप से कार्य व्यापार की निकट समय में समाप्ति का पता चले उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) मैं अभी हिसार से आया हूँ।
(ii) मैंने सेब खाया है।
(iii) अध्यापिका पढ़कर आई है।

(3) पूर्ण भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है की कार्य निश्चित किए गये समय से पहले ही पूरा हो चुका था उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य को समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। कार्य के पूर्ण होने के स्पष्ट बोध को पूर्ण भूतकाल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में था, थी, थे, चुका था, चुकी थी, चुके थे आदि आते हैं वो पूर्ण भूतकाल होता है।

जैसे :-

(i) पुष्पा ने नृत्य किया।
(ii) वह दिल्ली गया था।
(iii) भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ था।

(4) अपूर्ण भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि कार्य भूतकाल में पूरा नहीं

हुआ था अपितु नियमित रूप से जारी रहा, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से कार्य के भूतकाल में शुरू होने का पता चले लेकिन खत्म होने का पता न चले, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में रहा था, रही थी, रहे थे आदि आते हैं, वे अपूर्ण भूतकाल होते हैं।

जैसे :-

(i) मोहन मैदान में घूम रहा था।
(ii) वह हॉकी खेल रहा था।
(iii) सुनील पढ़ रहा था।

(5) संदिग्ध भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से अतीत में हुए या करे हुए कार्य पर संदेह प्रकट किया जाए, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में गा, गे, गी आदि आते हैं, वे संदिग्ध भूतकाल होते हैं। क्रिया के जिस रूप से कार्य के भूतकाल में पूरा होने पर संदेह हो कि वह पूरा हुआ था या नहीं, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) सुनील हिसार गया था।
(ii) वे फुटबॉल खेले होंगे।
(iii) बस छूट गई होगी।

(6) हेतुहेतुमद् भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य हो सकता था लेकिन दूसरे कार्य की वजह से हुआ नहीं, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं। इसमें पहली क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होती है। पहली क्रिया तो पूरी नहीं होती लेकिन दूसरी भी पूरी नहीं हो पाती। जिसमे क्रिया के होने में कोई शर्त पायी जाये उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) मैं आगरा जाती तो ताजमहल देखती।
(ii) सुरेश मेहनत करता तो सफल हो जाता।
(iii) यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

(7) समयकालीन भूतकाल :- जिन वाक्यों के अंत में रहा था, रही थी, रहे थे आदि आते हैं और समय का निश्चित बोध होता है, उसे समयकालीन भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) वे पिछले तीन घंटे से टीवी देख रहे थे।
(ii) वे दो दिन से खेल रहे हैं।

2. वर्तमान काल :-

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले की काम अभी हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से समय का पता चले और क्रिया व्यापार का वर्तमान समय में पता चले उसे वर्तमान काल कहते हैं।

जिन वाक्यों के अंत में ता , ती , ते , है , हैं आते हैं, वो वर्तमान काल कहलाता है। क्रियाओं के होने की निरन्तरता को वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :-

(i) राम अभी-अभी आया है।
(ii) वर्षा हो रही है।
(iii) शान गाता है।

वर्तमान काल के भेद :-

(1) सामान्य वर्तमान काल
(2) अपूर्ण वर्तमान काल
(3) पूर्ण वर्तमान काल
(4) संदिग्ध वर्तमान काल
(5) तात्कालिक वर्तमान काल
(6) संभाव्य वर्तमान काल

(1) सामान्य वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से कार्य की पूर्णता और अपूर्णता का पता न चले, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। अर्थात जिस क्रिया से क्रिया के सामान्य रूप का वर्तमान में होने का पता चलता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

जिन वाक्यों के अंत में ता है , ती है , ते हैं, ता हूँ , ती हूँ आदि आते हैं, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते है। जो क्रिया वर्तमान में सामान्य रूप में पायी जाती है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। जहाँ पर क्रिया का प्रारम्भ बोलने के समय होता है।

जैसे :-

(i) राम घर जाता है।
(ii) वह गेंद खेलता है।
(iii) सीता पढ़ती है।

(2) अपूर्ण वर्तमान काल :- अपूर्ण का अर्थ होता है – अधूरा। क्रिया के जिस रूप से कार्य के लगातार होने का पता चलता है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते है। जिन वाक्यों के अंत में रहा है , रहे है , रही है , रहा हूँ आदि आते हैं, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :-

(i) श्याम गेंद खेल रहा है।
(ii) वह घर जा रहा है।
(iii) अनीता गीत गा रही है।

(3) पूर्ण वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से कार्य के अभी पूरे होने का पता चलता है, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। इसमें हमें कार्य की पूर्ण सिद्धि का पता चलता है। इसमें हमें क्रिया के व्यापार के तत्काल पूरे होने के बारे में पता चलता है।

जैसे :-

(i) मैंने फल खाए हैं।
(ii) उसने गेंद खेली है।
(iii) वह आया है।

(4) संदिग्ध वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल क्रिया के होने या करने पर शक हो उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में ता होगा, ती होगी, ते होंगे आदि आते हैं, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। इसमें वर्तमान काल में संदेह होने का बोध होता है।

जैसे :-

(i) सविता पत्र लिखती होगी।
(ii) वह गाता होगा।
(iii) रमा खाती होगी।

(5) तात्कालिक वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता हो कि कार्य वर्तमान में हो रहा है, उसे तात्कालिक वर्तमान काल कहते हैं। इसमें बोलते समय क्रिया का व्यापार चलता रहता है। इसमें इसकी पूर्णता का पता नहीं चलता है।

जैसे :-

(i) मैं पढ़ रहा हूँ।
(ii) वह जा रहा है।
(iii) हम कपड़े पहन रहे हैं।

(6) संभाव्य वर्तमान काल :- संभाव्य का अर्थ होता है संभावित या जिसके होने की संभावना हो। इससे वर्तमान काल में काम के पूरे होने की संभावना होती है उसे संभाव्य वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :-

(i) वह आया हो।

(ii) वह लोटा हो।

3. भविष्य काल :- क्रिया के जिस रूप से क्रिया के आने वाले समय में पूरा होने का पता चले उसे भविष्य काल कहते हैं। इससे आगे आने वाले समय का पता चलता है। जिन वाक्यों के अंत में गा , गे , गी आदि आते हैं वे भविष्य काल होते हैं।

जैसे :-

(i) मैं कल विद्यालय जाऊँगा।

(ii) खाना कुछ देर में बन जाएगा।

(iii) राजू देर तक पढ़ेगा।

भविष्य काल के भेद :-

(1) सामान्य भविष्य काल।

(2) संभाव्य भविष्य काल।

(3) हेतुहेतुमद्भविष्य भविष्य काल।

(1) सामान्य भविष्य काल :- क्रिया के जिस रूप से क्रिया के सामान्य रूप का भविष्य में होने का पता चले उसे सामान्य भविष्य काल कहते हैं। अर्थात जिन शब्दों के अंत में एगा , एगी , एगे आदि आते हैं उन्हें सामान्य भविष्य काल कहते हैं। इससे क्रिया के भविष्य में होने का पता चलता है।

जैसे :-

(i) वह खाना खाएगी।

(ii) बच्चे खेलने जायेंगे।

(2) संभाव्य भविष्य काल :- क्रिया के जिस रूप से आगे कार्य होने या करने की संभावना का पता चले उसे संभाव्य भविष्य काल कहते हैं। इसमें क्रियाओं का निश्चित पता नहीं चलता। इसमें भविष्य में किसी कार्य के होने की संभवना होती है।

जैसे :-

(i) शायद कल सुनील आगरा जाए।

(ii) शायद आज वर्षा हो।

(iii) शायद चोर पकड़ा जाएगा।

(3) हेतुहेतुमद्भविष्य काल:- क्रिया के जिस रूप से एक कार्य का पूरा होना दूसरी आने वाले समय की क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतुहेतुमद्भविष्य काल कहते हैं। इसमें एक क्रिया दूसरी पर निर्भर होती है। इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है।

जैसे :-

(i) यदि छुट्टियाँ होंगी तो मैं आगरा जाऊँगा।
(ii) अगर तुम मेहनत करोगे तो फल अवश्य मिलेगा।
(iii) वह आए तो मैं जाऊँ।

कारक

12

कारक

कारक शब्द का अर्थ होता है – क्रिया को करने वाला। जब क्रिया को करने में कोई न कोई अपनी भूमिका निभाता है, उसे कारक कहते है।

कारक के उदाहरण :-

(i) राम ने रावण को बाण मारा।
(ii) रोहन ने पत्र लिखा।
(iii) मोहन ने कुत्ते को डंडा मारा।

कारक के भेद

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

कारक के लक्षण , चिह्न , और विभक्ति चिह्न इस प्रकार हैं :-

(i) कर्ता ——— क्रिया को पूरा करने वाला ——— ने ——— प्रथमा
(ii) कर्म ——— क्रिया को प्रभावित करने वाला ——— को ——— द्वितीया
(iii) करण ——— क्रिया का साधन ——— से, के द्वारा, द्वारा ——— तृतीया
(iv) सम्प्रदान ——— जिसके लिए काम हो ——— को ,के लिए ——— चतुर्थी
(v) अपादान ——— जहाँ पर अलगाव हो ——— से ——— पंचमी
(vi) संबंध ——जहाँ पर पदों में संबंध हो ——— का , की , के , रा ,री , रे ——— षष्ठी
(vii) अधिकरण ——— क्रिया का आधार होना ——— में , पर ——— सप्तमी
(viii) सम्बोधन ———किसी को पुकारना ——— हे , अरे ! , हो! ——— सम्बोधन।

(1) कर्ता कारक :-

जो वाक्य में कार्य करता है, उसे कर्ता कहा जाता है। अर्थात वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले उसे कर्ता कहते हैं। कर्ता कारक की विभक्ति ने होती है। ने विभक्ति का प्रयोग भूतकाल की क्रिया में किया जाता है। कर्ता स्वतंत्र होता है। कर्ता कारक में ने विभक्ति का लोप भी होता है।

इस पद को संज्ञा या सर्वनाम माना जाता है। हम प्रश्नवाचक शब्दों के प्रयोग से भी कर्ता का पता लगा सकते हैं। संस्कृत का कर्ता ही हिंदी का कर्ताकारक होता है। कर्ता की ने विभक्ति का प्रयोग ज्यादातर पश्चिमी हिंदी में होता है। ने का प्रयोग केवल हिंदी और उर्दू में ही होता है।

जैसे :-

(i) राम ने पत्र लिखा।
(ii) हम कहाँ जा रहे हैं।
(iii) मीता ने आम खाया।

(2) कर्म कारक :-

जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका चिह्न को माना जाता है। लेकिन कहीं कहीं पर कर्म का चिह्न लोप होता है।

बुलाना , सुलाना , कोसना , पुकारना , जमाना , भगाना आदि क्रियाओं के प्रयोग में अगर कर्म संज्ञा हो तो को विभक्ति जरुर लगती है। जब विशेषण का प्रयोग संज्ञा की तरह किया जाता है तब कर्म विभक्ति 'को' जरुर लगती है। कर्म संज्ञा का एक रूप होता है।

जैसे :-

(i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।
(ii) सीता फल खाती है।
(iii) अमर सितार बजा रहा है।

(3) करण कारक :-

जिस साधन से क्रिया होती है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह से, द्वारा और के द्वारा होता है। जिसकी सहायता से कोई कार्य किया जाता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक का क्षेत्र बाकी कारकों से बड़ा होता है।

जैसे :-

(i) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
(ii) बच्चा बोतल से दूध पीता है।
(iii) राम ने रावण को बाण से मारा।

(4) सम्प्रदान कारक :-

सम्प्रदान कारक का अर्थ होता है – देना। जिसके लिए कर्ता काम कर्ता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक के विभक्ति चिह्न के लिए और को होता है। इसको किसके लिए प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी पहचाना जा सकता है। सामान्य रूप से जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

जैसे :-

(i) गरीबों को खाना दो।
(ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।
(iii) माँ बेटे के लिए खाना लाई।

(5) अपादान कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो, वहाँ पर अपादान कारक होता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना, उत्पन्न होना, डरना, दूरी, लजाना, तुलना करना आदि का पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न से होता है। इसकी पहचान किससे जैसे प्रश्नवाचक शब्द से भी की जा सकती है।

जैसे :-

(i) पेड़ से आम गिरा।
(ii) हाथ से छड़ी गिर गई।
(iii) सुरेश शेर से डरता है।

(6) संबंध कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग , वचन के अनुसार बदल जाती हैं।

जैसे :-

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।

(7) अधिकरण कारक :-

अधिकरण का अर्थ होता है – आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर , ऊपर , बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।

इसकी पहचान किसमें , किसपर , किस पे आदि प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी की जा सकती है। कहीं-कहीं पर विभक्तियों का लोप होता है तो उनकी जगह पर किनारे , आसरे , दीनों , यहाँ , वहाँ , समय आदि पदों का प्रयोग किया जाता है। कभी कभी में के अर्थ में पर और पर के अर्थ में में लगा दिया जाता है।

जैसे :-

(i) हरी घर में है।

(ii) पुस्तक मेज पर है।

(iii) पानी में मछली रहती है।

(8) सम्बोधन कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से बुलाने या पुकारने का बोध हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। जहाँ पर पुकारने , चेतावनी देने , ध्यान बटाने के लिए जब सम्बोधित किया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसकी पहचान करने के लिए (!) चिह्न लगाया जाता है। इसके चिह्न हे , अरे , अजी आदि होते हैं। इसकी कोई विभक्ति नहीं होती है।

जैसे :-

(i) हे ईश्वर ! रक्षा करो।

(ii) अरे बच्चों ! शोर मत करो।

(iii) हे राम ! यह क्या हो गया।

वाच्य

13

प्र1. वाच्य किसे कहते हैं?

उ0 क्रिया के जिस रूपांतर से यह बोध हो कि क्रिया द्वारा किए गए विधान का केन्द्र बिंदु कर्ता है, कर्म है अथवा क्रिया है, उसे वाच्य कहते हैं। जैसे:– गीता नाच रही है। इस वाक्य में 'नाचना' क्रिया प्रधान है तथा 'गीता' कर्ता है इसलिए यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

प्र.2 वाच्य के कितने भेद हैं?

उ0 वाच्य के दो भेद हैं

1. कर्तृवाच्य।
2. अकर्तृवाच्य।

1. कर्तृवाच्य:– जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे:–
   1. राम पढ़ रहा है।
   2. मोहन खेल रहा है।
   3. अध्यापक पढ़ा रहे थे।

   इन तीनों वाक्यों में 'राम, मोहन, अध्यापक' कर्ता हैं, इसलिए यह कर्तृवाच्य है।

प्र.3 अकर्तृवाच्य के कितने भेद हैं?

उ0 अकर्तृवाच्य के दो भेद हैं:–

1. कर्मवाच्य।
2. भाववाच्य।

क. कर्मवाच्य:– जिस वाक्य में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इसमें सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

जैसे:–

1. कृष्ण से कंस मारा गया।
2. रीना को चाय दी गई।
3. राम से पुस्तक लिखी जाती है।

ख. भाववाच्य:– जिस वाक्य में भाव प्रधान हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। इन वाक्यों में क्रिया की प्रधानता होती है। इनका प्रयोग प्राय: निषेधार्थ में होता है, जैसे–

1. मुझसे चला नहीं जाता।
2. उससे खाया नहीं जाता।
3. थोड़ी देर सो लिया जाए।

वाच्य की दृष्टि से वाक्य परिवर्तन

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में:–

कर्तृवाच्य में कर्ता के कारण कारक को चिह्न 'से' लगाया जाता है, और कर्म में, प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे:–

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1.	मैं रोटी खाता हूँ।	मुझसे रोटी खाई जाती है।
2.	मैंने गाना गाया।	मुझसे गाना गाया गया।
3.	तुम फूल तोड़ोगे।	तुम से फूल तोड़ा जाएगा।

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य में:–

इसमें कर्ता के आगे 'से', 'द्वारा', या 'के द्वारा' लगाया जाता है।

भाववाच्य बनाने के लिए कर्ता को करण कारक में बदल दो।

जैसे:–

	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	बच्चे खेलेंगे।	बच्चों से खेला जाएगा।
2.	राम तेज दौड़ा है।	राम से तेज दौड़ा जाता है।
3.	राधा नहीं सोती।	राधा से सोया नहीं जाता।

3. कर्मवाच्य या भाववाच्य से कर्तृवाच्य में

कर्मवाच्य या भाववाच्य से कर्तृवाच्य बनाना।

	कर्मवाच्य या भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1.	राम से भागा नहीं जाता।	राम भाग नहीं सकता।
2.	मोहन से चला नहीं जाता।	मोहन चल नहीं सकता।
3.	उठो, अब खाया जाए।	उठो, अब खाएँ।

उपसर्ग

14

उपसर्ग

संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओं में उस अव्यय या शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं जो कुछ शब्दों के आरंभ में लगकर उनके अर्थों का विस्तार करता है अथवा उनमें कोई विशेषता **उत्पन्न करता है। उसे उपसर्ग कहते हैं** जैसे - अ, अनु, अप, वि, आदि उपसर्ग है।

उपसर्ग और उनके अर्थबोध

संस्कृत में बाइस (22) उपसर्ग हैं। प्र, परा, अप, सम्, अनु, **अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ,** नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्/उद्, अभि, प्रति, परि तथा उप।

उदाहरण

अति - अतिशय, अतिरेक
अधि - अधिपति, अध्यक्ष
अधि - अध्ययन, अध्यापन
अनु - अनुक्रम, अनुताप, अनुज
अनु - अनुकरण, अनुमोदन
अप - अपकर्ष, अपमान
अप - अपकार, अपयश, **अपमान**
अभि - अभिनंदन, अभिलाप
अभि - अभिमुख, अभिनय
अभि - अभ्युत्थान, **अभ्युदय**
अव - अवगणना, अवतरण
अव - अवकृपा, अवगुण
आ - आसक्त, आजन्म, आचरण
उत् - उत्कर्ष, उत्तीर्ण
उप - उपाध्यक्ष, उपदिशा, उपवन
दुर्, दुस् - दुराशा, दुरुक्ति, दुश्चिन्ह, दुष्कृत्य.
नि - निमग्न, निबंध
नि - निडर, निकम्मा, निहत्था

ख. भाववाच्य:– जिस वाक्य में भाव प्रधान हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। इन वाक्यों में क्रिया की प्रधानता होती है। इनका प्रयोग प्राय: निषेधार्थ में होता है, जैसे–

1. मुझसे चला नहीं जाता।
2. उससे खाया नहीं जाता।
3. थोड़ी देर सो लिया जाए।

वाच्य की दृष्टि से वाक्य परिवर्तन

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में:–

कर्तृवाच्य में कर्ता के कारण कारक को चिह्न 'से' लगाया जाता है, और कर्म में, प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे:–

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1.	मैं रोटी खाता हूँ।	मुझसे रोटी खाई जाती है।
2.	मैंने गाना गाया।	मुझसे गाना गाया गया।
3.	तुम फूल तोड़ोगे।	तुम से फूल तोड़ा जाएगा।

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य में:–

इसमें कर्ता के आगे 'से', 'द्वारा', या 'के द्वारा' लगाया जाता है।

भाववाच्य बनाने के लिए कर्ता को करण कारक में बदल दो।

जैसे:–

	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	बच्चे खेलेंगे।	बच्चों से खेला जाएगा।
2.	राम तेज दौड़ा है।	राम से तेज दौड़ा जाता है।
3.	राधा नहीं सोती।	राधा से सोया नहीं जाता।

प्रत्यय 15

वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदंत (कृत्+अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे- लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है, तथा लेखक कृदंत शब्द है।

क्रम	प्रत्यय	मूल शब्द\धातु	उदाहरण
1	अक	लेख्, पाठ्, कृ, गै	लेखक, पाठक, कारक, गायक
2	अन	पाल्, सह्, ने, चर्	पालन, सहन, नयन, चरण
3	अना	घट्, तुल्, वंद्, विद्	घटना, तुलना, वन्दना, वेदना
4	अनीय	मान्, रम्, दृश्, पूज्, श्रु	माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय
5	आ	सूख, भूल, जाग, पूज, इष्, भिक्ष्	सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा
6	आई	लड़, सिल, पढ़, चढ	लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई
7	आन	उड़, मिल, दौड़	उड़ान, मिलान, दौड़ान
8	इ	हर, गिर	हरि, गिरि
9	इया	छल, जड़, बढ़, घट	छलिया, जड़िया, बढ़िया, घटिया
10	इत	पठ, व्यथा, फल, पुष्प	पठित, व्यथित, फलित, पुष्पित
11	इत्र	चर्, पो, खन्	चरित्र, पवित्र, खनित्र
12	इयल	अड़, मर, सड़	अड़ियल, मरियल, सड़ियल
13	ई	हँस, बोल, त्यज्, रेत	हँसी, बोली, त्यागी, रेती
14	उक	इच्छ्, भिक्ष्	इच्छुक, भिक्षुक
15	तव्य	कृ, वच्	कर्तव्य, वक्तव्य
16	ता	आ, जा, बह, मर, गा	आता, जाता, बहता, मरता, गाता
17	ति	अ, प्री, शक्, भक्त	अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति
18	ते	जा, खा	जाते, खाते
19	त्र	अन्य, सर्व, अस्	अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र
20	न	क्रंद, वंद, मंद, खिद्, बेल, ले	क्रंदन, वंदन, मंदन, खिन्न, बेलन, लेन
21	ना	पढ़, लिख, बेल, गा	पढ़ना, लिखना, बेलना, गाना
22	म	दा, धा	दाम, धाम
23.	य	गद्, पद्, कृ, पंडित, पश्चात्, दंत्, ओष्ठ	गद्य, पद्य, कृत्य, पाण्डित्य, पाश्चात्य, दंत्य ओष्ठ्य
24	या	मृग, विद्	मृगया, विद्या
25	रू	गे	गेरू
26	वाला	देना, आना, पढ़ना	देनेवाला, आनेवाला, पढ़नेवाला
27	ऐया\वैया	रख, बच, डाँट\गा, खा	रखैया, बचैया, डटैया, गवैया, खवैया
28	हार	होना, रखना, खेवना	होनहार, रखनहार, खेवनहार

वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों- संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे- सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय हैं तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

क्रम	प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
1	आइ	पछताना, जगना	पछताइ, जगाइ
2	आइन	पण्डित, ठाकुर	पण्डिताइन, ठकुराइन
3	आई	पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा	पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई, चौड़ाई
4	आनी	सेठ, नौकर, मथ	सेठानी, नौकरानी, मथानी
5	आयत	बहुत, पंच, अपना	बहुतायत, पंचायत, अपनायत
6	आर/आरा	लोहा, सोना, दूध, गाँव	लोहार, सुनार, दूधार, गँवार
7	आहट	चिकना, घबरा, चिल्ल, कड़वा	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट
8	इल	फेन, कूट, तन्द्र, जटा, पंक, स्वप्न	फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल, पंकिल, स्वप्निल, धूमिल
9	इष्ठ	कन्, वर्, गुरु, बल	कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ
10	ई	सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत, ढोलक	सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती, ढोलकी, तेली,
11	ईन	ग्राम, कुल	ग्रामीण, कुलीन
12	ईय	भवत्, भारत, पाणिनी, राष्ट्र	भवदीय, भारतीय, पाणिनीय, राष्ट्रीय
13	ए	बच्चा, लेखा, लड़का	बच्चे, लेखे, लड़के
14	एय	अतिथि, अत्रि, कुंती, पुरुष, राधा	आतिथेय, आत्रेय, कौंतेय, पौरुषेय, राधेय
15	एल	फुल, नाक	फुलेल, नकेल
16	ऐत	डाका, लाठी	डकैत, लठैत
17	एरा/ऐरा	अंध, साँप, बहुत, मामा, काँसा, लुट	अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लुटेरा
18	ओला	खाट, पाट, साँप	खटोला, पटोला, सँपोला
19	औती	बाप, ठाकुर, मान	बपौती, ठकरौती, मनौती
20	औटा	बिल्ला, काजर	बिलौटा, कजरौटा
21	क	धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल	धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक
22	कर	विशेष, खास	विशेषकर, खासकर
23	का	खट, झट	खटका, झटका
24	जा	भ्राता, दो	भतीजा, दूजा
25	ड़ा, ड़ी	चाम, बाछा, पंख, टाँग	चमड़ा, बछड़ा, पंखड़ी, टँगड़ी
26	त	रंग, संग, खप	रंगत, संगत, खपत
27	तन	अद्य	अद्यतन
28	तर	गुरु, श्रेष्ठ	गुरुतर, श्रेष्ठतर
29	तः	अंश, स्व	अंशतः, स्वतः
30	ती	कम, बढ़, चढ़	कमती, बढ़ती, चढ़ती

संधि

16

संधि

संधि का शाब्दिक अर्थ है - मेल या संयोग। अर्थात दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है या परिवर्तन होता है , उसे संधि कहते हैं।
संधि में दो बातें उल्लेखनीय है-

1.सन्धि दो वर्णों के बीच होती है।
(अ) स्वर और स्वर के साथ मेल या
(ब स्वर और व्यंजन के साथ या
(स) व्यंजन और स्वर के साथ या
(द) विसर्ग और स्वर या व्यंजन के साथ
2. सन्धि होने पर शब्द का रूप बदल जाता है।
जैसे -
1. विद्या + आलय = विद्यालय (आ +आ = आ)
2. हिम + आलय = हिमालय (अ + आ = आ)

प्रश्न - सन्धि के कितने प्रकार होते हैं ?
उत्तर- सन्धि के तीन प्रकार होते हैं :-
स्वर संधि।
व्यंजन संधि।
विसर्ग सन्धि।

प्रश्न - स्वर संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर- दो स्वरों के मेल से जो विकार या रूप परिवर्तन होता है ,
उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
जैसे -
हिम + आलय = हिमालय (अ +आ = आ) [म् +अ = म] 'म' में 'अ' स्वर जुड़ा हुआ है
पो + अन = पवन (ओ +अ = अव)

प्रश्न - स्वर सन्धि के कितने प्रकार हैं ?

उत्तर - स्वर संधि के प्रमुख पाँच प्रकार हैं -

दीर्घ स्वर संधि
गुण स्वर संधि
वृद्धि स्वर संधि
यण स्वर संधि
अयादि स्वर संधि

प्रश्न - दीर्घ स्वर संधि किसे कहते हैं ? उदहारण सहित समझाइए।

उत्तर - जब दो सवर्ण स्वर आपस में मिलकर दीर्घ हो जाते हैं , तब दीर्घ स्वर संधि होता है। यदि 'अ' 'आ' 'इ' 'ई' 'उ' 'ऊ' और 'ऋ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ' 'ई' 'ऊ' और ॠ हो जाते हैं, अर्थात दीर्घ हो जाते हैं।

अ + अ = आ
उ + उ = ऊ
अ + आ = आ
उ + ऊ = ऊ

जैसे -

(अ + अ = आ)

ज्ञान + अभाव = ज्ञानाभाव
स्व + अर्थी = स्वार्थी
देव + अर्चन = देवार्चन

प्रश्न - गुण स्वर सन्धि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' 'उ' या 'ऊ' और ऋ आए तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए' 'ओ' और अर् हो जाता है। इस मेल को गुण स्वर संधि कहते हैं।

अ + इ = ए
आ + उ = ओ
आ + इ = ए
आ + ऋ = अर्

देव + इन्द्र = देवेन्द्र
सुर + इंद्र = सुरेंद्र
भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र

प्रश्न - वृद्धि स्वर सन्धि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' रहे तो 'ऐ' एवं 'ओ' और 'औ' रहे तो 'औ' बन जाता है। इसे वृद्धि स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे -

अ + ए = ऐ
अ + ऐ = ऐ
आ + ए = ऐ

महा + ओषधि = महौषधि
गंगा + ओघ = गंगौघ
महा + ओज = महौज

प्रश्न - यण स्वर संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यदि 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो 'इ' और 'ई' का 'य', 'उ' और 'ऊ' का 'व' तथा ऋ का 'र' हो जाता है। इसे यण स्वर संधि कहते हैं।

इ + अ = य
इ + आ = या
ई + आ = या
इ+अ=य
इ+ऊ=यू
इ+ए=ये

अति+अधिक=अत्यधिक
अत+इ+अ+धिक्
य
अत्यधिक

प्रश्न - अयादि संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यदि 'ए' 'ऐ' 'ओ' 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का अव तथा 'औ' का 'आव' हो जाता है। इस परिवर्तन को अयादि सन्धि कहते हैं।

ए+अ=अय
ने+अन=नयन
न+ए+अ+न
ने+अन =नयन

ऐ+अ=आय
न+ऐ+अ+क
न+आय+क
नै+अक=नायक

प्रश्न - व्यञ्जन सन्धि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - व्यञ्जन वर्ण के साथ स्वर वर्ण या व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन या स्वर वर्ण के साथ व्यंजन वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न हो या परिवर्तन हो, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। इस संधि में दो वर्णों में से एक वर्ण व्यंजन या दोनों वर्ण व्यंजन हो सकते हैं, किन्तु दोनों वर्ण स्वर नहीं हो सकते। जैसे -

दिक् + गज = दिग्गज (यहाँ व्यंजन से व्यंजन वर्ण का मेल हुआ है)
अभि + सेक = अभिषेक (यहाँ स्वर से व्यंजन वर्ण का मेल हुआ है)
सत् + चित + आनंद = सच्चिदानंद
(यहाँ व्यंजन से व्यंजन एवं व्यंजन से स्वर का मेल हुआ है)

वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + मार्ग = षण्मार्ग
उत् + नति = उन्नति

प्रश्न - विसर्ग संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर - विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को विसर्ग संधि कहते हैं।
जैसे- मनः + रथ = मनोरथ।

विसर्ग संधि के नियम

1. यदि विसर्ग के बाद च या छ हो तो विसर्ग का श् हो जाता है, ट, ठ होने पर ष् और त,थ होने पर विसर्ग का स् हो जाता है|
निः + चय = निश्चय
निः + छल = निश्छल

2. यदि विसर्ग के पहले अ हो और उसके बाद किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ,पंचम वर्ण या य, र, ल, व, ह आए तो विसर्ग का ओ हो जाता है| जैसे –
यशः + गान = यशोगान
मनः + रथ = मनोरथ

3. यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार हो तथा बाद में क, ख, प, फ, आए तो विसर्ग का ष् हो जाता है| जैसे –
निः + प्राण = निष्प्राण
निः फल = निष्फल

4.यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार हो तथा बाद में आ, ग, घ, ध, म, वर्ण आए तो विसर्ग के स्थान पर र या र् हो जाता है | जैसे –
निः आशा = निराशा
निः + धन = निर्धन

5. यदि विसर्ग के पहले अ हो तथा बाद में क, ख, प, फ, में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता | जैसे –
प्रातः + काल = प्रातःकाल
पयः + पान = पयःपान

6.यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो तथा बाद में र आए तो इ के स्थान पर ई औए उ के स्थान पर ऊ हो जाता है, जैसे –

नि: + रव = नीरव

नि: + रस = नीरस

7. यदि विसर्ग के पहले और बाद में अ हो तो ओ हो जाता है और बाद वाले अ का लोप होकर (ऽ) का चिन्ह लग जाता है | जैसे –

प्रथमः + अध्याय = प्रथमोऽध्याय

सः + अहम = सोऽहम

8. यदि विसर्ग के पहले अ या आ हो और बाद में क आए तो विसर्ग का स् हो जाता है, जैसे –

नमः + कार = नमस्कार

भाः + कार = भास्कर

संधि किसे कहते है
संधि के भेद संधि के उदहारण

संधि-संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों या ध्वनियों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते है।

विद्या+आलय= विद्यालय, नर+इंद्र= नरेंद्र, गण+ईश= गणेश

संधि के तीन भेद

1. स्वर (अच्) संधि
2. व्यञ्जन (हल्) संधि
3. विसर्ग (:) संधि

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

उदाहरण -

चरण + अमृतः

अ + अ

दीर्घ सन्धिः

पाणिनिः सूत्रः - 'अकः सवर्णे दीर्घः'

\+

अमृतः

= चरणामृतः

उदाहरण - पुष्प + अंजली

अ + अ

↓ ↓

दीर्घ सन्धि:

विद्या + आलय:

आ + आ

↓ ↓

दीर्घ सन्धि:

पाणिनि: सूत्र: - "अक: सवर्णे दीर्घ:"

विद्या

+

= विद्यालय:

पुस्तक + आलय:

अ + आ

↓ ↓

दीर्घ सन्धि:

पाणिनि: सूत्र: - "अक: सवर्णे दीर्घ:"

+

= पुस्तकालय:

रवीन्द्रः

जैन

रवि + इन्द्रः

इ + इ

२ २

दीर्घ सन्धिः

राम + अवतारः

अ + अ

१ १

दीर्घ सन्धिः

पाणिनिः सूत्रः - "अकः सवर्णे दीर्घः"

\+

अवतारः

= रामावतारः

रवीन्द्रः जैन

रवि + इन्द्रः

इ + इ

२ २

दीर्घ सन्धिः

राम + अवतारः

अ + अ

१ १

दीर्घ सन्धिः

पाणिनिः सूत्रः - "अकः सवर्णे दीर्घः"

+

अवतारः

= रामावतारः

उदाहरण

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

आ + अ = आ

रजनी + ईश = रजनीश

ई +ई = ई

भानु + उदयः=भानूदयः

उ + उ = ऊ

अ / आ +ई/इ = ए

अ /आ + उ/ ऊ = ओ

अ + ऋ = अर्

आ + ऋ = अर्

अ/आ + ऌ = अल्

राकेश:

राका का अर्थ - पूर्णिमा की रात

शर्मा

राका + ईश:

आ + ई

१ २

गुण सन्धि:

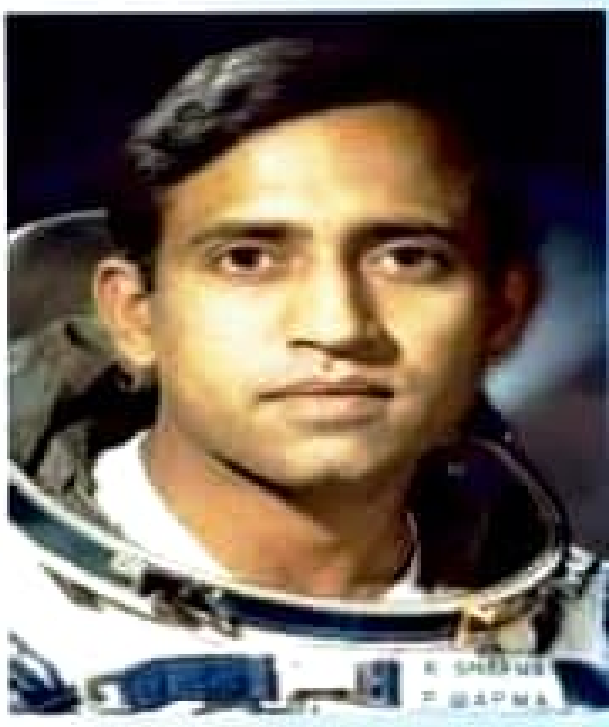

राजेश:

खन्ना

राजा + ईश:

आ + ई

१ २

गुण सन्धि:

यादव:

+ ईश:

ई

२

न्धि:

परम+ ईश्वर =परमेश्वर

राम + ईश्वर =रामेश्वर

अ + ई = ए

सूर्य + उदयः = सुर्योदयः

हित + उपदेशः = हितोपदेशः

अ +उ = ओ

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ =औ

उदा. -

वसुधा + एव

आ + ए

१ ३

वृद्धि सन्धि:

वसुधैव

पाणिनिः सूत्रः - " वृद्धिरेचि "

हित + एषी = हितैषी

एक + एकं = एकैकं

अ + ए =ऐ

वन + औषधि: = वनौषधि:

तव + औषधि: = तवौषधि:

अ + औ = औ

मत + ऐक्य: मतैक्य (अ + ऐ = ऐ)

जल + ओघ: जलौघ (अ + ओ =औ)

महा + ऐश्वर्य: महैश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)

महा + ओजस्वी: महौजस्वी (आ + ओ = औ)

परम + औषध: परमौषध (अ + औ = औ)

इ/ई उ/ऊ ऋ ऌ

य् व् र् ल्

उदा. -

अधि + आय: अध्याय (इ + आ = या)

अनु + इत: अन्वित (उ + इ = वि)

इति + आदि: इत्यादि (इ + आ = या)

प्रति + एक: प्रत्येक (इ + ए = ये)

अति + आवश्यक: अत्यावश्यक (इ + आ = या)

प्रति + अक्ष: प्रत्यक्ष (इ + अ = य)

प्रति + आघात: प्रत्याघात (इ + आ = या)

अति + अंत: अत्यंत (इ + अ = य)

- इ + अ = य् – अति + अल्प = अत्यल्प
- ई + अ = य् – देवी + अर्पण = देव्यर्पण
- उ + अ = व् – सु + आगत = स्वागत
- ऊ + आ = व – वधू + आगमन = वध्वागमन
- ऋ + अ = र् – पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

ए ऐ ओ औ

अय् आय् अव् आव्

उदा. -

गायिका

गै + ईका

ऐ ई

३ २

अयादि सन्धिः

पाणिनिः सूत्रः - "एचोऽयवायावः"

उदा. -

पो + इत्र: =पवित्र (ओ + इ = अव)

चे + अन: =चयन (ए + अ = अय)

भो + इति = भवति

पौ + अक: =पावक

पौ + अन: =पावन

नै + अक: =नायक

शे + अनम् = शयनम् - (ए + अ = अय्)

ने + अनम् = नयनम् - (ए + अ = अय्)

चे + अनम् = चयनम् - (ए + अ = अय्)

शे + आनम् = शयानम् - (ए + आ = अया)

नै + अकः = नायकः - (ऐ + अ = आय्)

गै + अकः = गायकः - (ऐ + अ = आय्)

गै + इका = गायिका - (ऐ + इ = आयि)

पो + अनम् = पवनम् - (ओ + अ = अव्)

भो + अनम् = भवनम् - (ओ + अ = अव्)

पौ + अकः = पावकः - (औ + अ = आव्)

शौ + अकः = शावकः - (औ + अ = आव्)

धौ + अकः = धावकः - (औ + अ = आव्)

उदा. -

(आ) ओ + अ = ओ

विष्णो + अत्र = विष्णोऽत्र

सो + अवदत् = सोऽवदत्

(अ) ए + अ = ए

रामो + अहसत् = रामोऽहसत

को + अपि = कोऽपि

उदाहरणम् -

ए + अ = ऽए

हरे + अव = हरेऽव

लोके + अस्मिन् = लोकेऽस्मिन्

विद्यालये + अस्मिन् = विद्यालयेऽस्मिन्

ओ + अ = ऽओ

विष्णो + अव = विष्णोऽव

रामो + अधुना = रामोऽधुना

लोको + अयम् = लोकोऽयम्